1004

M.A. IV Semester Examination 2020

Subject : Hindi

Paper : IV – **विशेष अध्ययन तुलसीदास**

Max.Marks : 85 Min.Marks: 29

निर्देशः सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी के अंक उनके समक्ष अंकित किये गए हैं।

1. निम्नांकित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिएः 45अंक

(अ) केशव, कहि न जाइ, का कहिये।
देखत तब रचना विचित्र अति, समुझि मनहिमन रहिये।
भून्य भीति पर चित्र, रंग नहि तनु बिनु लिखा चितेरे।
धोये मिटे न मरै भीति, दुख पाइय इति तनु हेरे।
रविकर नीर बसै अति दारुन, मकर रूप तेहि माहीं।
बदन हीन सो ग्रसै चराचर, पान करन जे जाहीं।
कोउ कह सत्य, झूठ कहे कोउ जुगल प्रबल कोउ मानै।
तुलसीदास परिहरै तीनि भ्रम, सो आपुन पहिचानै।

अथवा

ऐसी मूढ़ता या मनकी।
परिहरि राम–भगति–सुरसरिता, आस करत ओसनकी।।1।।
धूम–समूह निरखि चातक ज्यो, तृशित जानि मति घनकी।
नहिं तहँ सीतलता न बारि, पुनि हानि होति लोचनकी।।2।।
ज्यो गच–काँच बिलोकि सेन जड छाँह आपने तनकी।
टूटत अति आतुर अहार बस, छति बिसारि आननकी।।3।।
कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि! जानत हौ गति जनकी।
तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पनकी।।4।।

(ब) अब लौं नसानी, अब न नसैहों।
रामकृपा भव–निसा सिरानी जागे फिर न डसैहौं।।
पायो नाम चारु चिंतामनि उर करतें न खसैहौं।
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहिं कसैहौं।

Contd…

परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन निज बस ह्वै न हँसैहौं।
मन मधुपहिं प्रन करि, तुलसी रघुपति पदकमल बसैहौं।।

अथवा

यह बिनती रघुबीर गुसाईं।
और आस बिस्वास भरोसो, हरौ जीव–जड़ताई।।1।।
चहौं न सुगति, सुमति–संपति कछु रिधि सिधि बिपुल बड़ाई।
हेतु–रहित अनुराग रामपद, बढ़ अनुदिन अधिकाई।।2।।
कुटिल करम लै जाइ मोहि, जहँ–जहँ अपनी बरियाई।
तहँ–तहँ जनि छिन छोह छाँड़िये, कमठ–अण्डकी नाई।।3।।
यहि जगमें, जहँ लगि या तनुकी, प्रीति प्रतीति सगाई।
ते सब तुलसिदास प्रभु ही सों, होहिं सिमिति इक ठाई।।4।।

(स) लपट कराल ज्वालजालमाल दहूँ दिसि,
धूम अकुलाने, पहिचाने कौन काहि रे।
पनी को ललात बिललात, जरे गात जात
परे पाइमाल जात भ्रात! तूँ निबाहि रे।।
प्रिया तूँ पराहि, नाथ! नाथ! तू पराहि, बाप! बप तूँ
पराहि, पूत! पूत! तू पराहि रे।।
'तुलसी' बिलोकि लोग ब्याकुल बेहाल कहैं,
लेहि दससीस अब बीस चख चाहि रे।।

अथवा

प्रबल प्रचंड बरिबंड बाहुदंड बीर
धाए जातुधान, हनुमान लियो घेरि कै।
महाबलपुंज कुंजरारि ज्यों गरजि, भट
जहाँ–तहाँ पटके लँगर फेरि–फेरि कै।
मारे लात, तोरे गात, भागे जात हाहा खात,
कहैं, 'तुलसीस! राखि' रामकी सौं टरि कै।
ठहर–ठहर परे, कहरि–कहरि उठैं,
हहरि–हहरि हरु सिद्ध हँसे हेरि कै।।

Contd…

2. तुलसी साहित्य में कवितावली के महत्व का निरूपण कीजिए। 12

अथवा

भक्ति आंदोलन में तुलसी के समग्र अवदान का मूल्यांकन कीजिए।

3. 'तुलसीदास भारतीय संस्कृति के व्याख्याता हैं'– इस कथन की युक्तियुक्त समीक्षा कीजिए। 12

अथवा

''विनय पत्रिका आत्मनिवेदन, कला एवं भाव की दृश्टि से तुलसीदास की सर्वोत्कृष्ट कृति है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

4. निम्न में से किन्हीं दो लघु उत्तरीय प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिएः 10

(क) तुलसी के दार्शनिक विचारों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

(ख) अन्तःसाक्ष्य एवं बहिर्साक्ष्यों के आधार पर तुलसी के जीवन–वृत को रेखांकित कीजिए।

(ग) विनय पत्रिका महाकाव्य है या खण्डकाव्य या गीतिकाव्य विवेचना कीजिए।

(घ) तुलसी की भक्ति के स्परूप को रेखांकित कीजिए।

5. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में से किन्हीं छः के उत्तर दीजिएः 06

1. तुलसी के दीक्षा गुरु का नाम लिखिए।
2. तुलसी की प्रमुख काव्य भाषा कौन–सी है?
3. तुलसी के बचपन का नाम लिखिए।
4. किस समीक्षक ने तुलसी को लोकनायक की उपाधि से मंडित किया?
5. सगुण एवं निर्गुण के साम्यवाद को दर्शाने वाले तुलसी के दोहे को लिखिए।
6. तुलसी द्वारा भारीर छोड़ने के समय के दोहे को लिखिए।
7. रामकाव्य धारा के तुलसी के अतिरिक्त दो अन्य कवियों के नाम लिखिए।
8. भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग किसने कहा है? नामोल्लेख कीजिए।

———